http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 12, 10-12

Article ID: 416

कृषि-पर्यटन (Agri&Tourism) की अवधारणा और संभावनाएं

पवन सालवी एंव मनोज कुमार

पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

1. प्रस्तावनाः कृषि और पर्यटन का अनूठा मेल

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा खेती पर निर्भर है। वहीं, पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो अर्थव्यवस्था को गति देने, रोजगार सृजन करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब इन दोनों क्षेत्रों का समन्वय किया जाए तो एक नया और सशक्त क्षेत्र उभर कर आता है जिसे 'कृषि-पर्यटन' (Agri&Tourism) कहते हैं। यह अवधारणा विकसित देशों में पहले से ही लोकप्रिय है और अब भारत में भी इसे बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास का माध्यम बन सकता है, बल्कि शहरी और विदेशी पर्यटकों को ग्रामीण संस्कृति, कृषि विधियों और परंपराओं से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम भी है।

2. कृषि-पर्यटन की परिभाषा और मूल अवधारणा

कृषि-पर्यटन का आशय उन पर्यटन गतिविधियों से है जिनमें पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर किसानों के जीवन, खेती के तरीकों, पशुपालन, ग्रामीण संस्कृति और पारंपरिक भोजन आदि का अनुभव करते हैं। इसमें पर्यटक खेतों में काम करना, बैलगाड़ी की सवारी, फसल की कटाई, दुग्ध उत्पादन, ग्रामीण खेल और हस्तशिल्प का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। यह न केवल मनोरंजन और ज्ञानवर्धन का माध्यम बनता है, बल्कि इससे किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत भी प्राप्त होता है। यह अवधारणा शहरी लोगों के लिए "ग्रीन ब्रेक" प्रदान करती है और ग्रामीण समुदायों के लिए एक विकासशील मॉडल।

3. भारत में कृषि-पर्यटन की आवश्यकता

भारत में कृषि संकट, किसानों की आय में गिरावट और बेरोजगारी जैसी समस्याओं से निपटने के लिए कृषि-पर्यटन एक आशाजनक समाधान हो सकता है। खेती अब केवल खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं रह सकती, उसे बहुआयामी बनाना होगा। भारत जैसे देश में जहाँ विविध भौगोलिक, सांस्कृतिक और कृषि पारंपरिक विशेषताएं हैं, वहाँ कृषि-पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। यह ग्रामीण युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार देने, पलायन रोकने और महिला सशक्तिकरण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। साथ ही यह किसानों की मौजूदा आय में वृद्धि कर सकता है।

4. अंतरराष्ट्रीय उदाहरण और भारत में शुरुआती प्रयास

अमेरिका, इटली, ऑस्ट्रेलिया और जापान जैसे देशों में कृषि-पर्यटन काफी विकसित है। वहाँ खेतों में होमस्टे, फार्म टूर, जैविक खेती प्रदर्शन और स्थानीय खाद्य अनुभव जैसे कार्यक्रम चलते हैं। भारत में भी महाराष्ट्र पहला राज्य था जिसने संगठित रूप से कृषि-पर्यटन को बढ़ावा देना शुरू किया। वहाँ के पिंपलगांव जैसे गांव में अब पर्यटक खेतों में रहते हैं, फसल उगाते हैं, और ग्रामीण जीवन का अनुभव करते हैं। इसके अलावा

केरल, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, और सिक्किम जैसे राज्यों में भी कृषि पर्यटन के प्रयास किए जा रहे हैं।

5. कृषि-पर्यटन के प्रमुख लाभ

कृषि-पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण, और पर्यावरणीय संतुलन के कई लाभ होते हैं। इससे किसानों को अपनी भूमि से जुड़कर अतिरिक्त आय मिलती है, जिससे उन्हें कर्ज से मुक्ति, बच्चों की शिक्षा और जीवनस्तर सुधारने में मदद मिलती है। पर्यटकों को प्राकृतिक वातावरण, जैविक भोजन और मानसिक शांति मिलती है। स्थानीय उत्पादों, हस्तशिल्प और पारंपरिक व्यवसायों को भी बाजार मिलता है। इसके साथ ही, शहरी और ग्रामीण समाज के बीच संवाद का सेतु बनता है।

6. बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षण की आवश्यकता

कृषि-पर्यटन के सफल संचालन के लिए बुनियादी सुविधाएं जैसे सड़क, बिजली, स्वच्छता, आवास, जल आपूर्ति, और इंटरनेट कनेक्टिविटी आवश्यक हैं। साथ ही किसानों को पर्यटकों के साथ संवाद, स्वच्छता मानकों, खानपान व्यवस्था, और सुरक्षा जैसे विषयों पर प्रशिक्षण देना भी जरूरी है। इस क्षेत्र में NGO कृषि विश्वविद्यालय, पर्यटन विभाग और पंचायतों की साझेदारी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यदि यह प्रशिक्षण स्थानीय भाषा और परंपराओं के अनुरूप हो तो इसका प्रभाव और भी बेहतर हो सकता है।

7. कृषि-पर्यटन और महिला सशक्तिकरण

गांवों में महिलाएं पारंपरिक व्यंजन, हस्तशिल्प, घरेलू पशुपालन और सफाई व्यवस्था में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। यदि कृषि-पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए तो महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं। वे घरेलू ठहराव सेवाएं (Home stay), पारंपरिक खानपान, मेहंदी, लोक नृत्य, बुनाई, आदि में अपनी सेवाएं देकर परिवार की आय में योगदान दे सकती हैं। इससे महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और मानसिक स्तर पर सशक्त बनाने में मदद मिलती है।

8. कृषि-पर्यटन और युवा रोजगार

ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि-पर्यटन एक नया क्षेत्र खोल सकता है। यदि उन्हें गाइड, ट्रैवल असिस्टेंट, फोटोग्राफर, लोक कलाकार, या सोशल मीडिया प्रचारक के रूप में प्रशिक्षित किया जाए तो वे अपने गांव में रहकर ही रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे वेबसाइट, यूट्यूब, और इंस्टाग्राम पर प्रचार कर वे वैश्विक दर्शकों को भी आकर्षित कर सकते हैं। यह डिजिटल साक्षरता और स्वरोजगार दोनों को बढ़ावा देगा।

9. कृषि पर्यटन और स्थानीय उत्पादों की बिक्री

कृषि-पर्यटन से स्थानीय उत्पाद जैसे शहद, मसाले, जैविक फल-सब्जियाँ, अचार, अनाज, और हस्तशिल्प आदि को बाजार मिल सकता है। पर्यटक जब गाँवों से लौटते हैं, तो वे इन वस्तुओं को खरीदते हैं और प्रचार भी करते हैं। इससे किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिलता है और बाजार का विस्तार होता है। इसके लिए एक स्थानीय ब्रांड और प्रमाणीकरण प्रणाली विकसित की जा सकती है, जिससे उत्पादों की विश्वसनीयता और मांग बढ़ेगी।

10. सरकारी योजनाएँ और सहायता

भारत सरकार द्वारा "स्वदेश दर्शन योजना", "एक भारत श्रेष्ठ भारत", "प्राकृतिक कृषि मिशन" और "डे-नयूएलएम" जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं जो कृषि-पर्यटन से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकती हैं। इसके अलावा राज्यों को अपने टूरिज्म नीति में Agri&Tourism को शामिल कर, कर में छूट, ऋण सहायता, प्रशिक्षण और विपणन सहायता जैसी सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। यदि पंचायत स्तर पर भी इस दिशा में प्रयास हों तो

e-ISSN: 2583 - 0430
कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

स्थानीय स्तर पर बदलाव लाया जा सकता है।

11. पर्यावरणीय और सांस्कृतिक लाभ

कृषि-पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता, हरियाली और टिकाऊ जीवनशैली को बढ़ावा देता है। पर्यटक गांव की शुद्ध हवा, पानी और जैविक वातावरण का अनुभव करते हैं, जिससे पर्यावरणीय चेतना भी बढ़ती है। साथ ही लोक संगीत, कला, नृत्य और पारंपरिक पोशाकों के प्रदर्शन से स्थानीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है। यह वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का एक प्रभावी साधन है।

12. चुनौतियाँ और समाधान

कृषि-पर्यटन की राह में कई चुनौतियाँ हैं ह जैसे निवेश की कमी, प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव, स्थानीय प्रशासन की उदासीनता, और पर्यटकों की सुविधाओं की कमी। साथ ही, सुरक्षा, स्वास्थ्य और संचार संबंधी मुद्दे भी हैं। इनका समाधान केवल सरकारी नीति से नहीं होगा, बल्कि सामुदायिक भागीदारी, NGO का सहयोग, CSR फंडिंग और निजी निवेश की भागीदारी से ही संभव है। यदि इन चुनौतियों को योजनाबद्ध ढंग से हल किया जाए, तो कृषि-पर्यटन ग्रामीण भारत की तस्वीर बदल सकता है।

निष्कर्ष

कृषि-पर्यटन भारत के ग्रामीण विकास, किसानों की आय बढ़ाने और शहरी-ग्रामीण संबंधों को मजबूत करने का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल रोजगार के नए अवसर सृजित करता है, बल्कि समाज में समरसता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा देता है। यदि सरकार, समाज और निजी क्षेत्र मिलकर इसे एक आंदोलन का रूप दें तो यह भारत के गांवों को आत्मनिर्भर और आधुनिक बना सकता है, और "वोकल फॉर लोकल" के सपने को साकार कर सकता है।